B.A. (Part II) EXAMINATION, 2019

(For Non Collegiate)

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न-पत्र—रीति काल

Time Allowed : Three Hours　　　　Maximum Marks : 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(क) पूरन पुरान अरु परुष पुरान परि-
पूरण बतावैं न बतावैं और उक्ति कों।
दरसन देते जिन्हैं दरसन समुझैं,
न 'नेति' कहैं वेद छाँड़ि भेद जुक्तिकों॥
जानि यह 'केशोदास' अनुदित राम-राम

रढ़त रहत न डरत पुनरुक्ति कों।
रूप देहि अनिमाहि, गुन देहि गरिमाहि,
नाम देहि महिमाहि, भक्ति देहि मुक्ति कों॥ 10

अथवा

नाचि अचानक हीं उठै बिनु पावस बन मोर।
जानति हौं, नंदित करी इहि दिसि नन्दकिसोर॥
भूषन-भारु सँभारिहै क्यौं इहिं तन सुकुमार।
सूधे पाइ न धर परैं सोभा ही कैं भार॥
पत्रा हीं तिथि पाइयै वा घर कैं चहुँ पास।
नितप्रति पून्यौई रहै आनन-ओप-उजास॥ 10

(ख) मोत सुजान अनीत करौ जिन,
हा हा न हूजियै मोहि अमोही।
दोठि कौ और कहूँ नहिं ठौर,
फिरी दृग रावरे रूप की दोही।
एक बिलास की टेक गहें लगि,
आस रहे, बसि प्रान-बटोही।
हौं घन आनन्द जीवन मूल दई
कत प्यासनि भारत मोही॥ 10

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

अथवा

चाहती सिंगार तिन्हैं सिंगी को सगाई कहा,
औधि की है आस तौ अधारी कैसे गहिये।
बिरह अगाथ वहाँ सुन्नि की समाधि कौन,
जोग राहि भावै जु वियोग दाह दहिये।
'सेख' कहै मैन-मुद्रा मोहन जू लाये बन,
मुद्रा लाओ काननि सुने ई सूल सहिये।
लागै लग नेकहूँ कहूँ, जो बैरी नोरी होय
ऊधौ एते बीच की बिचारि बात कहिये॥ 10

(ग) माखन सों मन दूध सों जोबन,
है दधि सों अधिकौ उर ईठी।
जा छबि आगे छपा कर छाँदि समेज सुधा,
बसुधा सब सीठी॥
नैनन नेह चुवै, कवि 'देव'
बुझावत बैन बियोग अँगीठी।

ऐसो रसीली अहीरी अहै,
कहौ क्यों न लगै मनमोहन मीठी॥ 10

अथवा

बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे
राम-नाम राख्यो अति रसना सुधर में।
हिन्दुन की चोटी रोटी राखि है सिपाहिन की
काँधे में जनेऊ राख्यो मालाराखी गर में।
मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह
बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में। 10

(घ) आयीं हौ खेलन फाग इहाँ वृषभानपुरी तें सखी सँग लीने।
त्यों 'पद्माकर' गावतीं गीत रिझावती हाव बताइ नवीने॥
कंचन की पिचकी कर में लिये केसरि के रंग सों अंग भीने।
छोटी-सी छाती छुटी अलकैं अति बैस की छोटी बड़ी परबीने॥ 10

अथवा

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

मालती की माल तेरे तन कौ परस पाइ,
और मालतीन हू तैं अधिक बसति है।
सोने तैं स्वरूप, तेरे तन कौं अनूप रूप,
जातरुप-भूषन तैं और न सहाति है॥
सेनापति स्याम तेरी सहज निकाई रीझै,
काहे कौ सिंगार कै कै बितवति राति है।
प्यारी और भूषन कौ भूषन है तन तेरौ,
तेरियै सवास और बास बासी जाति है॥ 10

2. 'रामचन्द्रिका' के आधार पर केशव के काव्य-सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

बिहारी कवि होने के साथ-साथ विविध विषयों के ज्ञाता थे। इस आधार पर बिहारी की बहुज्ञता पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। 15

3. देव के काव्य में शृंगार-चित्रण की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

"भूषण एक राष्ट्रीय कवि थे।" इस कथन की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए। 15

4. "घनानन्द प्रेम की पीर के कवि थे।" इस आधार पर घनानन्द के काव्य का मूल्यांकन कीजिए। 15

अथवा

"आलम और घनानन्द स्वच्छन्दतावादी कवि थे।" इस आधार पर दोनों की काव्यगत विशेषताओं पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। 15

5. 'पद्माकर' के काव्य में वर्णित प्रकृति-चित्रण का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 15

अथवा

सेनापति रीतिकालीन कवि हैं अथवा भक्तिकालीन ? अपना मत युक्तियुक्त सोदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए। 15

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com